



सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

ईमानदारी का अनमोल खजाना

बहुत समय पहले, पंचतंत्र की कहानियों जैसा एक सुंदर-सा गाँव था, जिसका नाम था हरितपुर. गाँव चारों ओर से घने जंगल और एक स्वच्छ, गहरी नदी से घिरा हुआ था. उस गाँव में सोनू नाम का एक मेहनती लकड़हारा अपनी बूढ़ी माँ के साथ रहता था. उनका घर मिट्टी का छोटा-सा था, जिसकी छत पर सूखी घास बिछी रहती थी. घर में ज्यादा सामान नहीं था, लेकिन प्यार और संतोष भरपूर था.

सोनू रोज़ सुबह सूरज निकलने से पहले उठ जाता. वह माँ के पैर धुता, थोड़ा-सा सादा खाना खाता और अपनी पुरानी लोहे की कुल्हाड़ी लेकर जंगल की ओर निकल जाता. उसकी माँ हमेशा कहती, 'बेटा, कम कमाओ पर सच्चाई से कमाओ.' सोनू इन शब्दों को अपना मंत्र मानता था. जंगल में वह केवल सूखी और गिरी हुई लकड़ियों ही काटता. वह पेड़ों से बात भी करता, 'तुम हमें छाया और हवा देते हो, मैं तुम्हें कभी नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा.' धीरे-धीरे जंगल के जानवर भी उसे पहचानने लगे थे. चिड़ियों उसके पास बेखौफ बैठ जातीं, और हिरन दूर से उसे निहारते रहते. एक दिन दोपहर के समय, जब सोनू सिर पर था, सोनू नदी के किनारे एक पेड़ की सूखी डाल काट रहा था. अचानक उसका पैर फिसला और उसकी कुल्हाड़ी हाथ से छूटकर गहरी नदी में जा गिरी. 'छपाक!' की आवाज़ हुई और पानी शांत हो गया.

सोनू धरसा गया. वह किनारे पर बैठ गया और सोचने लगा, 'अब मैं क्या करूँगा? यही तो मेरी रोजी-रोटी है.' उसकी आँखों से आँसू बहने



लगे. वह नदी के साफ पानी में झाँकता, पर कुल्हाड़ी कहीं दिखाई नहीं देती. तभी नदी का पानी चमकने लगा. पानी से एक तेज रोशनी निकली और एक सुंदर परी प्रकट हुई. उसके कपड़े मोतियों जैसे चमक रहे थे. उसने मधुर आवाज में पूछा, 'बेटा, तुम दुखी क्यों हो?'

सोनू ने हाथ जोड़कर परी बात सच-सच बता दी. परी मुस्कुराई और नदी में डुबकी लगा गई. थोड़ी देर बाद वह एक चमकती सोने की कुल्हाड़ी लेकर बाहर आई. उसने पूछा, 'क्या यह तुम्हारी है?'

सोनू ने उसे ध्यान से देखा. वह बहुत सुंदर थी, लेकिन उसने सिर झुका लिया और बोला, 'नहीं देवी, मेरी कुल्हाड़ी तो साधारण लोहे की थी. परी फिर पानी में गई और इस बार चाँदी की कुल्हाड़ी लेकर आई. 'क्या यह तुम्हारी है?'

सोनू ने फिर मना कर दिया, 'नहीं, यह भी मेरी नहीं है.' तीसरी बार परी उसकी पुरानी, पिसी

हुई लोहे की कुल्हाड़ी लेकर बाहर आई. सोनू की आँखों में चमक आ गई. 'हाँ, यही मेरी है!' उसने चमकने लगा. पानी से एक तेज रोशनी निकली और एक सुंदर परी प्रकट हुई. उसके कपड़े मोतियों जैसे चमक रहे थे. उसने मधुर आवाज में पूछा, 'बेटा, तुम दुखी क्यों हो?'

सोनू ने हाथ जोड़कर परी बात सच-सच बता दी. परी मुस्कुराई और नदी में डुबकी लगा गई. थोड़ी देर बाद वह एक चमकती सोने की कुल्हाड़ी लेकर बाहर आई. उसने पूछा, 'क्या यह तुम्हारी है?'

सोनू ने उसे ध्यान से देखा. वह बहुत सुंदर थी, लेकिन उसने सिर झुका लिया और बोला, 'नहीं देवी, मेरी कुल्हाड़ी तो साधारण लोहे की थी. परी फिर पानी में गई और इस बार चाँदी की कुल्हाड़ी लेकर आई. 'क्या यह तुम्हारी है?'

जब यह कहानी सुनी, तो उसके मन में लालच आ गया. उसने सोचा, 'अगर मुझे भी सोने की कुल्हाड़ी मिल जाए, तो मैं बहुत अमीर बन जाऊँगा.' अगले दिन वह जानबूझकर नदी पर गया और अपनी कुल्हाड़ी पानी में फेंक दी. फिर वह रोने का नाटक करने लगा. परी फिर प्रकट हुई और सोने की कुल्हाड़ी दिखाकर पूछने लगी, 'क्या यह तुम्हारी है?' मोहन तुरंत बोला, 'हाँ, यही मेरी है!'

परी का चेहरा कठोर हो गया. उसने कहा, 'झूठ और लालच से कभी भलाई नहीं होती.' इतना कहकर वह गायब हो गई. मोहन को अपनी असली कुल्हाड़ी भी वापस नहीं मिली. मोहन बहुत पछताया. वह सोनू के पास गया और बोला, 'मैंने लालच किया और सब खो दिया.'

सोनू ने उसे समझाया, 'दोस्त, गलती हर किसी से होती है. लेकिन हमें उससे सीख लेनी चाहिए.' उसने अपनी एक अतिरिक्त कुल्हाड़ी मोहन को दे दी और कहा, 'अब मेहनत और सच्चाई से काम करो.' मोहन की आँखों में आँसू आ गए. उसने वादा किया कि अब वह कभी झूठ नहीं बोलेगा. समय बीतता गया. हरितपुर गाँव खुशहाल हो गया. लोग एक-दूसरे की मदद करने लगे. बच्चों को जब भी कोई झूठ बोलने का मन करता, वे सोनू की कहानी याद करते.

गाँव के बुजुर्ग कहते, 'सच्चाई का रास्ता कठिन हो सकता है, लेकिन अंत में वहीं जीतता है.' और इस तरह सोनू की ईमानदारी ने न केवल उसका जीवन बदला, बल्कि पूरे गाँव को एक नई सीख दी.

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूँढकर निकालें.



छात्रों को चुनौती देने के लिए हमने दो चित्र तैयार किए हैं जिनमें अंतर ढूँढना है।

कविता

मेरे प्यारे पापा



पापा मेरे सबसे अच्छे दोस्त,
सदा रहते हैं मेरे साथ और
गोद में.
हँसी-खुशी से भर दें मेरा
दिन,
सिखाते हैं हमेशा सही और
सच्चाई की बात.

मजबूत हैं जैसे बड़ा पेड़,
मुझे देते हैं प्यार और ढेर
सारा फीड.
हर मुश्किल में रहते साथ
मेरे,
पापा मेरे हीरो, सबसे
प्यारे मेरे.

भूल भुलैया



जानकारी

आधुनिक युग का चमत्कार : कंप्यूटर

कंप्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक मशीन है जो हमारे द्वारा दी गई जानकारी को समझकर बहुत तेजी से काम करता है. यह गणित के सवाल हल कर सकता है, कहानियाँ टाइप कर सकता है, चित्र बना सकता है और गेम भी खेल सकता है. आज के समय में कंप्यूटर हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है. बच्चे पढ़ाई, प्रोजेक्ट बनाने और नई-नई जानकारियाँ खोजने के लिए कंप्यूटर का उपयोग करते हैं.

कंप्यूटर के मुख्य भाग होते हैं -
मॉनिटर, कीबोर्ड, माउस और सीपीयू. मॉनिटर वह स्क्रीन है जिस पर हमें शब्द और चित्र दिखाई देते हैं. कीबोर्ड की मदद से हम टाइप करते हैं. माउस से हम स्क्रीन पर चीजों को चुनते और खोलते हैं. सीपीयू को कंप्यूटर का 'दिमाग' कहा जाता है क्योंकि वही सभी कामों को नियंत्रित करता है और हमारी दी हुई जानकारी को प्रोसेस करता है.

कंप्यूटर कई प्रकार के होते हैं, जैसे डेस्कटॉप, लैपटॉप और टैबलेट. पहले कंप्यूटर बहुत बड़े होते थे, लेकिन अब वे छोटे और हल्के हो गए हैं. आजकल स्कूलों, बैंकों, अस्पतालों और दफ्तरों में कंप्यूटर का उपयोग होता है. डॉक्टर मरीजों की रिपोर्ट देखने के लिए और बैंक कर्मचारी पैसों का हिसाब रखने के लिए कंप्यूटर का इस्तेमाल करते हैं.

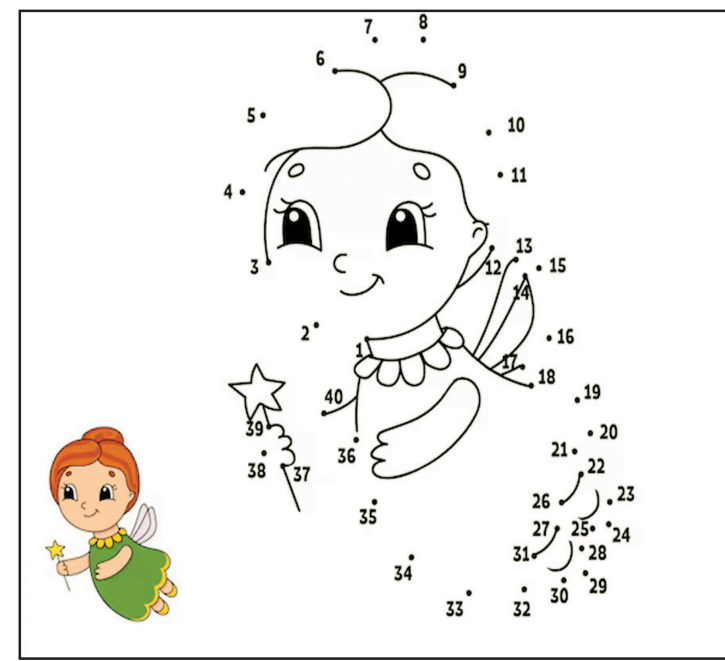
कंप्यूटर बहुत उपयोगी है, लेकिन हमें इसका सही तरीके से उपयोग करना चाहिए. बहुत ज्यादा समय तक स्क्रीन देखने से आँखों पर असर पड़ सकता है. इसलिए पढ़ाई और मनोरंजन के साथ-साथ खेलना और व्यायाम करना भी जरूरी है. इस प्रकार, कंप्यूटर एक समझदार और मददगार मशीन है जो हमारे काम को आसान और तेज बनाती है. अगर हम इसका सही उपयोग करें, तो यह हमारा सच्चा डिजिटल दोस्त बन सकता है.



रंग भरो



बिंदु मिलाओ



बिजली के रोचक तथ्य

- बिजली प्राकृतिक रूप से बादलों में बनती है.
- यह बहुत तेज चलती है, लगभग प्रकाश की गति के बराबर.
- इसका आविष्कार नहीं हुआ, बल्कि खोज की गई.
- बैटरी भी बिजली पैदा करती है.
- पंखा, टीवी, कंप्यूटर और फ्रिज बिजली से चलते हैं.
- इलेक्ट्रिक ईल जैसी मछलियाँ भी बिजली उत्पन्न कर सकती हैं.
- भारत का पहला बिजली घर 1897 में दार्जिलिंग में बना.



बिजली को हम देख या छू नहीं सकते, केवल असर महसूस कर सकते हैं. बिजली की बचत करना जरूरी है, इससे पर्यावरण और पैसा दोनों बचता है.

प्रेरक प्रसंग

चंद्रगुप्त मौर्य प्राचीन भारत के महान सम्राटों में से एक थे. उन्होंने न केवल एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, बल्कि मजबूत प्रशासन और सुव्यवस्थित शासन की नींव भी रखी. उनका जीवन संघर्ष, दूरदर्शिता और संगठन शक्ति का अद्भुत उदाहरण है.

सबसे महत्वपूर्ण कार्य था मौर्य साम्राज्य की स्थापना. उस समय उत्तर भारत कई छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था. चंद्रगुप्त ने अपने गुरु कौटिल्य के मार्गदर्शन में नंद वंश को पराजित कर लगभग 322 ईसा पूर्व मगध पर अधिकार कर लिया. इसके साथ ही एक शक्तिशाली और संगठित साम्राज्य की शुरुआत हुई.

चंद्रगुप्त मौर्य : एक महान राष्ट्र निर्माता

उनका दूसरा बड़ा कार्य था राजनीतिक एकीकरण. उन्होंने उत्तर-पश्चिम भारत तक अपना विस्तार किया और सिकंदर के बाद वहाँ शासन कर रहे यूनानी शासकों को पराजित किया. बाद में उनका युद्ध के बाद संधि हुई, जिसमें चंद्रगुप्त को अफगानिस्तान और बलूचिस्तान के कुछ क्षेत्र मिले. इस संधि से उनके साम्राज्य की सीमाएँ और मजबूत हुईं.

चंद्रगुप्त का सबसे प्रशंसनीय कार्य था सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था. उन्होंने एक केंद्रीकृत शासन प्रणाली स्थापित की. राज्य को कई प्रांतों में बाँटा गया, जहाँ अधिकारियों की नियुक्ति की गई. कर वसूली, न्याय व्यवस्था और सेना — सभी के लिए अलग-अलग विभाग बनाए गए. प्रशासन में अनुशासन और पारदर्शिता बनाए रखने पर विशेष ध्यान दिया गया.

उनकी सेना भी अत्यंत शक्तिशाली थी. कहा जाता है कि उनकी सेना में हजारों पैदल सैनिक, युद्धस्वार, रथ और हाथी शामिल थे. यह सेना न केवल विस्तार के लिए, बल्कि आंतरिक शांति बनाए रखने के लिए भी महत्वपूर्ण थी. मजबूत सेना के कारण ही उनका साम्राज्य सुरक्षित और स्थिर बना रहा.

आर्थिक क्षेत्र में भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किए. कृषि को बढ़ावा दिया गया, सिंचाई व्यवस्था सुधारी गई और व्यापार मार्गों को सुरक्षित बनाया गया. इससे व्यापार और उद्योग को प्रोत्साहन मिला.

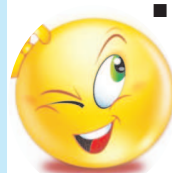


विदेशी व्यापार भी बढ़ा, जिससे राज्य की आय में वृद्धि हुई.

चंद्रगुप्त ने सामाजिक और धार्मिक सहिष्णुता को भी महत्व दिया. जीवन के अंतिम चरण में उन्होंने जैन धर्म अपनाया और राज-पाट अपने पुत्र बिंदुसार को सौंप दिया. कहा जाता है कि उन्होंने अपना अंतिम समय साधु के रूप में बिताया.

समग्र रूप से देखा जाए तो चंद्रगुप्त मौर्य केवल विजेता ही नहीं, बल्कि कुशल प्रशासक और राष्ट्र निर्माता भी थे. उनके द्वारा स्थापित प्रशासनिक ढाँचे और राजनीतिक एकता ने आगे चलकर भारत के इतिहास को नई दिशा दी.

बूझो तो जानें



- मैं दिन में चमकता, रात में सो जाता हूँ.
उत्तर: सूरज
- मैं गोल, नारंगी और मीठा हूँ.
उत्तर: संतरा
- मेरे चार पैर हैं, भौंकता हूँ, घर का दोस्त हूँ.
उत्तर: कुत्ता
- मैं पानी में तैरता हूँ, जमाँ पर नहीं.
उत्तर: मछली
- रात में चमकता हूँ, आसमान में बहुत सारे हैं.
उत्तर: तारा
- मैं लंबा हूँ, फल देता हूँ, जंगल में रहता हूँ.
उत्तर: आम का पेड़
- मेरा रंग हरा, सब्जियों में सबसे प्यारा.
उत्तर: पालक
- मुझे पीते हैं बच्चे, दाँत बनते मजबूत.
उत्तर: दूध
- कटने पर खुशबू फैलती, खाना बनाने में काम आता हूँ.
उत्तर: प्याज
- मुझे खोलो, अंदर लाल दाने, मीठा और रस वाला.
उत्तर: अनार

हंसी-टिठोली



- पप्पू: 'मम्मी, मछली का घर कहाँ है?'
- मम्मी: 'पानी में.'
- पप्पू: 'तो फिर मछली को मकान टैक्स क्यों नहीं देना पड़ता?'
- टीचर: 'अगर तुम्हारे पास 10 चॉकलेट हैं और तुम्हारा दोस्त 2 ले ले, तो क्या होगा?'
- बच्चा: 'सर, मेरी दोस्ती खतरे में पड़ेगी!'
- पप्पू अपने दोस्त से: 'मेरे जुते तो गायब हो गए, दोस्त: 'कहाँ गए?'
- पप्पू: 'मेरी मम्मी ने पहन लिया, बोली अच्छा लग रहा है!'
- बबलू: 'पापा, मुझे स्कूल नहीं जाना.'
- पापा: 'क्यों बेटा?'
- बबलू: 'क्योंकि मैं होमवर्क से डरता हूँ.'
- पापा: 'तो डर क्यों नहीं लगता टीवी से?'
- बबलू: 'टीवी डरती नहीं, हँसाती है!'
- पप्पू: 'डॉक्टर साहब, मुझे नौद नहीं आती.'
- डॉक्टर: 'सोने की दवा लो.'
- पप्पू: 'मैंने खा ली, लेकिन सपना देखने की आदत नहीं छोड़ता.'
- मम्मी: 'तुम्हारे पेंसिल में इरेज़र क्यों नहीं है?'
- पप्पू: 'मम्मी, गलतियाँ तो मैं बार-बार करता हूँ, इरेज़र जल्दी खत्म हो जाएगा!'

बच्चों अपनी कहानियाँ, कविताएँ, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएँ आदि bhopalnav@gmail.com पर भेजें.